iJRASET
International Journal For Research in
Applied Science and Engineering Technology

INTERNATIONAL JOURNAL
FOR RESEARCH
IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Volume: 12 Issue: XII Month of publication: December 2024

DOI: https://doi.org/10.22214/ijraset.2024.65802

www.ijraset.com

Call: 08813907089 | E-mail ID: ijraset@gmail.com

International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology (IJRASET)
ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 12 Issue XII Dec 2024- Available at www.ijraset.com

मिथिला लोक चित्रकला शैली

भावना कुमारी
पीएच.डी इतिहास विभाग, विश्वविद्यालय बी.एन.एम.यू, मधेपुरा

सारः बिहार के उत्तर और नेपाल की तराई में बसा मिथिलांचल अपनी लोकचित्र कला के लिए आज भी विश्व प्रसिद्ध हैं। यह क्षेत्र हमेशा से शांतिप्रिय रहा। इसलिए यहाँ कला संस्कृति का काफी विकास हुआ। आज भी मिथिला का समाज संस्कारों से बंधा हुआ है। यहाँ शैव, शाक्त, वैष्णव, और अन्य धर्मावलंबी सद्भाव से रहते हैं। मिथिला गंगा, कोसी और गंडक नदियों के बीच का भूभाग है जो अत्यधिक उपजाउ है। मिथिला की प्राचीन एवं अंतरराष्ट्रीय लोक चित्रकला शैली के प्रस्तुत विषय के विभिन्न प्रकारों एवं विभिन्न आयामों का समीक्षात्मक अध्ययन किया है। इसमें पारंपरिक एवं आधुनिकता का सोने व रत्नों का मेल स्पष्ट दिखाई देता है। उपयोग में लाने योग्य विषयो को देखते हुए मिथिला क्षेत्र में अत्याधिक प्रचलित लोक कला शैली का बड़ी कथा का सारांस विश्लेषण भी इसमें सम्मिलित है।

मुख्य बिंदु : लोक चित्रकला शैली, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, शिक्षा।

I. परिचय

लोक चित्रकला शैली की मनोरंजक परंपरा मिथिला में प्राचीन काल से हो रही है। चित्रों में सौंदर्यीकरण, देवी-देवताओं की पूजन, गृह रक्षा, विभिन्न संस्कारों (मण्डन, उपनयन एवं विवाह) के मांगलिक अवसरों पर भित्ती चित्रण किया जाता है।

'कोबर' लेखन तो महत्वपूर्ण ही रहे हैं। 'अरिपन' संस्कृत के मूल अर्पन शब्द का अपभ्रंश है। जिसका अर्थ स्थापना है। मिथिला की प्राचीन पाण्डुलिपियों में इसके साक्ष्य मिलते हैं। विभिन्न पर्वों पर मंदिरों तथा घर आँगन की जमीन पर गोबर-माटी से लीप कर पक्की जमीन को धोकर फूल पत्तियाँ, चावल का चौरठ, खड़ी, रामरस, गेरू एवं अन्य रंगों से चित्रांकन किया जाता है। देवोत्थान एकदाशी में 'अरिपन' आवश्यक होता है। चित्रों में प्रकृति के अतिरिक्त श्रीमदभागवत कीता, गीत गोविन्द तथा विद्यापति के गीतों का प्रभाव दिखता है। रामायण, सीतायन से संबंधित चित्रों की बहुलता देखी जाती है। ज्योतिरीश्वर एवं अन्य प्रसिद्ध पुस्तकों में भी इसके उल्लेख हैं। ब्रह्मवैवर्त पुराण में चित्रकला का उल्लेख मिलता है। 'अरिपन' चित्रण में ज्यामितीय अथवा परंपरागत रूपों में व्यवस्थित रूप से सजावट फूल पत्तियाँ, पशु पक्षी, पेड़-पौधे, महल, विभिन्न देवी-देवताओं के पदचिन्ह तथा मानव आकृतियाँ भी चित्रित की जाती है। तंत्र साधना में अरिपन का विशिष्ट महत्व है। वैदिक काल से मिथिला का इतिहास, संस्कृति, सामाजिक एवं धार्मिक अवधारणा जीवित है। आज भारत और नेपाल ही नहीं बल्कि विश्व भर में मिथिला के लोक चित्र कला प्रव्रजन हुआ है।

'मिथिला लोक चित्रकला शैली' मिथिला की सांस्कृतिक धरोहर है। यहाँ हमेशा लोक मान्यताओं पर आधारित संस्कृति पल्लवित-पुष्पित होती रही है। लेकिन यहाँ की सांस्कृतिक विरासत को अपनी जमीन पर कभी कोई उपयुक्त मान्यता नहीं मिली। चाहे भाषा का क्षेत्र हो, या चित्रकला का, प्रचीन विद्वान व्यक्तियों ने हमेशा उन्हें घृणा की दृष्टि से देखा। धन्यवाद की योग्य हैं यहाँ की महिलाएँ जो अपने कठिन परिश्रम के बल पर इस लोक संस्कृति की धरोहर को पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुरक्षित एवं विस्तार करती आ रही है।

लोक संस्कृति के इस पक्ष पर डॉ0 उपेन्द्र ठाकुर, पंडित लक्ष्मीनाथ झा, श्रीमति पुपुल जयकर, डॉ0 विजय कुमार ठाकुर, कृष्ण कुमार कश्यप, श्रीमति शशिबाला, उपेंद्र महारथी, भास्कर कुलकर्णी एवं विदेशी विद्वानों में जर्मनी की लोक कलाकर एरिका मोजर, फ्रांसीसी पत्रकार इव्स विक्को, अमेरिकन मानव विज्ञानी रेमंड ली ओवन, एथेनेटिक आर्ट फुउंडेशन के अध्यक्ष डेविड स्जेटन, ज्योतिंद्र जैन, नीलरेखा सरीखे विद्वानों ने इस संबंध में बहुत कुछ लिखा है।

प्राथमिक रूप से बाहरी दुनिया में मिथिला लोक चित्रकला को सम्मिलित मैथिल चित्रकला के रूप में ब्रिटिश पदाधिकारी डब्ल्यू. जी. आर्चर ने किया। पिकासों की मोनालिसा, मौर्यकालीन यक्षिणी की मूर्ति, अंजता की चित्रकला, एलोरा की मूर्तियाँ, कश्मीर की कालीनें कोणार्क का सूर्य मंदिर, भारतीय वास्तुकला, मूर्तिकला एवं चित्रकला के साथ मिथिला की लोक चित्रकला आज भी अपनी भाव या गुण के परिणामस्वरूप पूरे विश्व में अपना विशेष स्थान रखते हैं।

'मिथिला लोक चित्रकला' 'मधुबनी चित्रकला' के नाम से भी प्रसिद्ध है। लेकिन मधुबनी शब्द इस चित्रकला के क्षेत्र को संकीर्ण करता है। मधुबनी हो या सहरसा, पूर्णिया हो या भागलपुर, दरभंगा हो या समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर हो या सीतामढ़ी बेतिया हो या मधेपुरा, सभी स्थलों पर इस शैली की चित्रकारी की जाती है।

मधुबनी इस चित्रकला का केंद्र स्थान है, लेकिन इसी आधार पर इसे मधुबनी चित्रकला कहना न्यायसंगत नहीं है। सर्वव्यापी मापदंड पर इसका नामपद्धति 'मिथिला लोक चित्रकला' ही उचित है।

International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology (IJRASET)
ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 12 Issue XII Dec 2024- Available at www.ijraset.com

मिथिला लोक चित्रकला को विश्व चित्रकला के मानचित्र पर सम्मान प्राप्त करने का श्रेय स्वर्गीय भास्कर कुलकर्णी एवं कला विद्वान स्वर्गीय उपेंद्र महारथी को है। व्यवसायीकरण की प्रतिस्पर्द्धा में विश्व बाजार में स्थान दिलाने का श्रेय स्वर्गीय ललित नारायण मिश्र, पूर्व विदेश व्यापार मंत्री, बारत सरकार को है। जैसे-जैसे इस कला का व्यवसायीकरण होता गया कलाकारों की कलात्मक संबद्धता संकीर्ण होती गई। आज परिस्थिति यह आ गई है कि मिथिला लोक चित्रकला को लोककला कहा जाए या ललित कला अथवा एक व्यवसायिक कला। आज इसके मूल स्वरूप की रक्षा करने की आवश्यकता है। मिथिला लोक चित्रकला परंपरिक रूप से महिलाओं की गृहकला थी, लेकिन व्यवसायीकरण के कारण आज पुरूष वर्ग भी इस क्षेत्र में पदस्थापित कर रहे हैं।

'मिथिला लोक चित्रकला शैली' उस समृद्ध संस्कृति का जीवंत प्रमाण है, जो हजारों वर्षों से यहाँ के लोक जीवन में प्रवाहयुक्त है। ज्योतिरीश्वर ठाकुर के वर्णरत्नाकर में भी चित्र लेखन कला का उल्लेख है- जैसे भित्ती चित्र प्रकाश नामक लेख में जीवानन्द ठाकुर ने इसके काल के विषय में उल्लेख करते हुए लिखा है कि वैदिक काल से आज तक इसका उत्तरोतर विकास होता आया है। 'मिथिला लोक चित्रकला शैली' की एक सबसे बड़ी विशेषता यह है कि चित्रण कार्य पूर्णतः पारिवारिक महिला वर्ग द्वारा सामान्य गृहकला के रूप में किया जाता है।

'पोर्टफोलियो आर्ट मैग्जिन जो न्यूयॉर्क से प्रकाशित होती है, उसमें श्रीमति गोदावरी दत्त का कोबर छपा है, जो कोबरों के नमूनों में अधिक श्रेष्ठ नमूना है।'दी आर्ट ऑफ मिथिला' में श्रीमति गंगा देवी का लिखा कोबर रेखाचित्र की दृष्टि से अपना विशेष महत्व रखता है।

श्रीमति महासुन्दरी देवी का कोबर, दि अर्थेन ड्रम में प्रकाशित हुआ है, वह भी कोबर का एक अद्वितीय नमूना है।

मिथिला लोक चित्रकला को जिसने देखा-परखा सब ने कोबर की प्रशंसा की है। कला पत्रिका में इस विषय पर विभिन्न विद्वानों का अत्यावश्यक शोध निबन्ध छपे हैं जिसमें डब्लू. जी. आर्चर, जे. सी. माथुर, ह्वीटनी आदि विद्वान प्रमुख हैं। The Times Of India; Annual 1971 में श्रीमति पुपुल जयकर का निराशाजनक लेख छपा है।

कोबर के बाहर एक वास्तविक चित्रशाला रहती है, जिसमें मिथिला के लोक जीवन के दृश्यों को चित्र के माध्यम से दर्शाया जाता है। विभिन्न खाद पदार्थ, जैसे मछली, दही, केला, कटहल, आम, चूड़ा, चावल आदि लेकर ले जाने वाले भारवाहकों को चित्रित किया जाता है।

बाण के हर्षचरित में इस परंपरा का व्यवस्थित उल्लेख प्राप्त होता है, जब यह जानकारी हमें मिलती है कि हर्षवर्द्धन के संबंधी ग्रहवर्मन (7वीं शताब्दी) का कोबर घर महिलाओं के द्वारा देवी देवताओं के चित्रों से सजाया गया और उसके रहने की जगह की बाहरी दीवारों पर कामदेव तथा उसकी पत्नी रति को सुन्दरता से चित्रित किया गया।

पण्डित लक्ष्मीनाथ झा द्वारा रचित 'मिथिला की सांस्कृतिक लोकचित्रकला' अपनी कई विशेषताओं के कारण कला जगत की एक अद्वितीय निर्माण है। मिथिला की लोककला से सम्बद्ध 45 रंगीन चित्रों से सुसज्जित तथा वैदिक, पौराणिक, तांत्रिक एवं कई अन्य शास्त्रीय प्रमाणों से स्पष्ट तथ्यों के आधार पर बीते हुए सदी के छठे दशक के आरम्भिक कालखण्डों में रचित व प्रकाशित यह कालजयी पुस्तक भारत के प्रथम राष्ट्रपति प्रसिद्ध देशरत्न डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद, द्वितीय राष्ट्रपति डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्ण, बिहार के तत्कालीन राज्यपाल एम. अनन्तशयनम आय्यंगार, हूमायूँ कबीर, अन्तर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि प्राप्त कला मर्मज्ञ व समीक्षक प्रसिद्ध राय कृष्णादास, कालूलाल, श्रीमाली, कला-पारखी महाराजाधिराज डॉ0 सर कामेश्वर सिंह तथा अन्य कई प्रसिद्ध हस्तियों द्वारा न केवल प्रशंसत अनुशंसित रही है। बल्कि उन्होंने इस अदभुत कृति का जीवंत महत्वपूर्ण व उपयोगिता पर बल दिया है। इस शोध पत्र का उद्देश्य मिथिला लोक चित्रकला शैली पर प्रकाश डालना है और इसका हमारे जीवन शैली पर क्या प्रभाव पड़ सकता है।

II. शोध पद्धति

यह शोध पत्र द्वितीय स्रोत पर आधारित है तथा द्वितीय श्रोत में जर्नल, पत्रिका, किताबें, मूवी आदि को शामिल किया गया है।

III. निष्कर्ष

लोक चित्रकला शैली के बारे में हमेशा ही और आज विशिष्ट रूप से जन मानस की यह धारणा है कि जो राष्ट्र व समाज जितना अधिक लोक, संस्कृति, साहित्य और कला का अपने जीवन को अनुकूल बनाने में सफल है, वह उतना ही श्रेष्ठ और गौरवशाली समझा जाता है, क्योंकि लोक कला शैली अपनी सभ्यता संस्कृति में विशेषता एवं मंगलमय भावना अभिव्यक्त करती है। मिथिला में विभिन्न सामाजिक रीति-रिवाज, धार्मिक संस्कार और परंपरागत विश्वास से संबद्ध लोक मान्यताओं की जडें गहरी हैं। यहाँ की लोक परंपराएँ भारतीय सांस्कृतिक परंपरा के आधारभूत स्वरूप पर प्रभाव हमेशा दृष्टिगोचर होता है तथा प्राचीन समय से ही इस परंपरा के उत्तरोत्तर समृद्ध बनाने में इसका अमूल्य योगदान रहा है।

IV. सुझाव

कोई भी कलाकार अपनी रचनात्मक प्रक्रिया की दिशा और दशा के बारे में तभी पूरे मन से विचार कर सकते हैं, जब उसे पूर्ण संरक्षण और पूरी सुविधाएँ प्राप्त कराई जाए एवं उसे हर प्रकार से तनाव मुक्त रखा जाए, जिससे वे अपनी कला की साधना को पूरा कर सके। यह दायित्व समाज और सरकार दोनों का है।

©IJRASET: All Rights are Reserved | SJ Impact Factor 7.538 | ISRA Journal Impact Factor 7.894 |

संदर्भ

[1] झा, डॉ. अयोध्या नाथ. (2022), मिथिला लोक चित्रकला शैली, शशि प्रकाशन, नई दिल्ली.
[2] सिंघानिया, नितिन. (2023), भारतीय कला एवं संस्कृति, Me Graw Hill Education (India) Private Limited, नई दिल्ली.
[3] कश्यप, कृष्ण कुमार, (2009), मिथिला चित्र कोर, भारतीय विकास मंच बरहेता, लहेरिया सराय, दरभंगा, बिहार.
[4] कश्यप, कृष्ण कुमार. (2009), मिथिला चित्र प्रवेशिका, भारतीय विकास मंच बरहोता, लहेरिया सराय, दरभंगा बिहार.

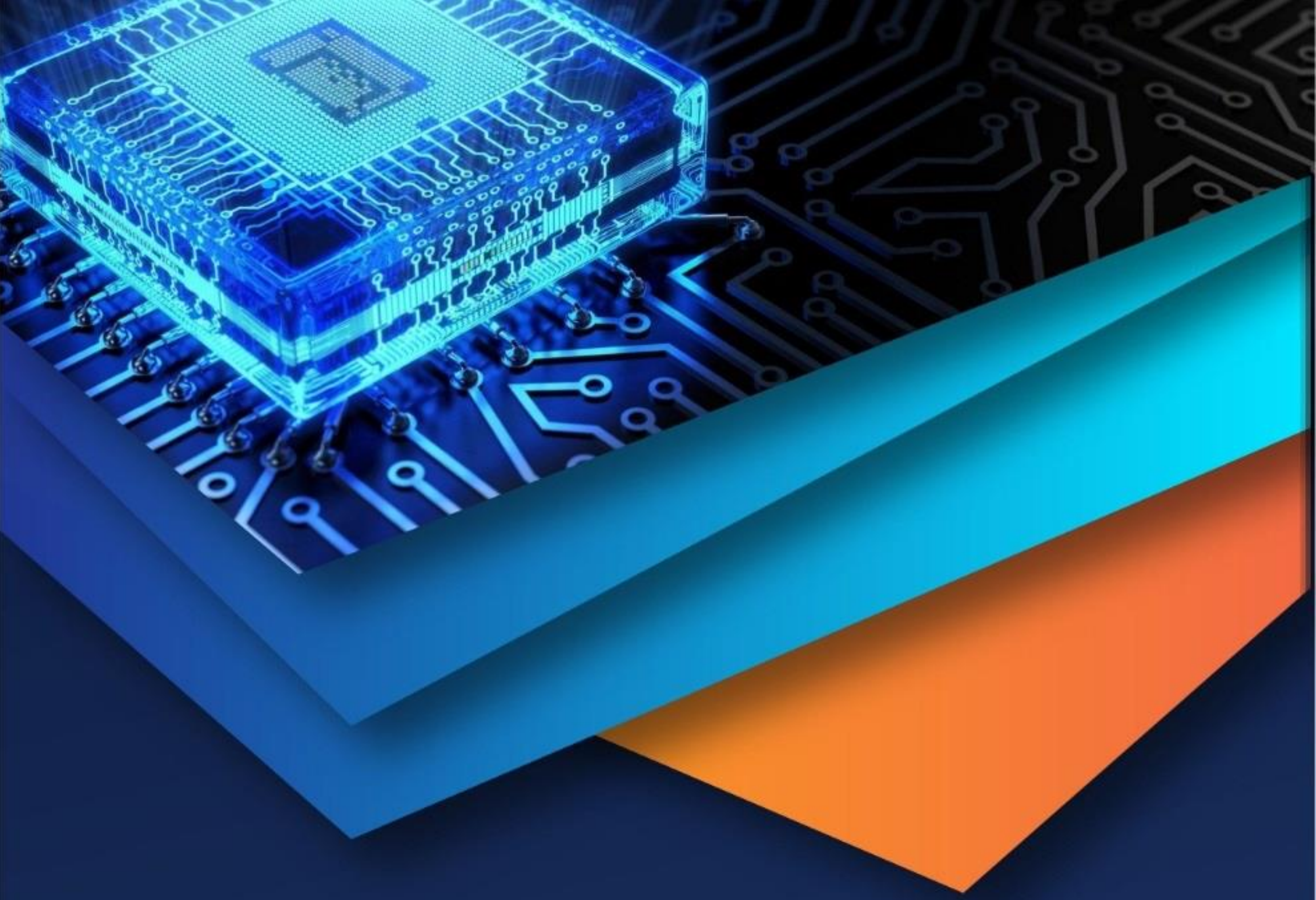

10.22214/IJRASET

INDEX COPERNICUS
45.98

IMPACT FACTOR:
7.129

TOGETHER WE REACH THE GOAL
IMPACT FACTOR:
7.429

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Call : 08813907089 (24*7 Support on Whatsapp)